अध्याय 1

वापसी और पुनर्निर्माण की राजा कुस्रू की घोषणा

एक पुराना भजन कहता है, "परमेश्वर आश्चर्य कर्मों को करने के लिये रहस्यमय तरीके से आगे बढ़ता है।"[1] परमेश्वर की रक्षात्मक देखभाल को एज्रा 1 की तुलना में कहीं भी बेहतर नहीं दर्शाया गया है। एज्रा की पुस्तक यहूदियों का अपने देश लौटने के, एक बार उनके पहुँचने पर मन्दिर पुनर्निर्माण के बारे में और उनके धर्म के पुनर्स्थापना के बारे में है। ये घटनाएँ कैसे हुई? एज्रा 1 के अनुसार कुस्रू, मिद्ध-फारसी सम्राट - एक अन्यजाति शासक के आदेश में, उन्होंने अपनी शुरुआत की थी। परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों के लिये अपने उद्देश्यों को एक मूर्तिपूजक राजा के माध्यम से पूरा किया।

पहला अध्याय इस्राएल के पुनरुत्थान की कहानी की शुरुआत करता है, जिसमें लगभग अस्सी वर्ष पहले एज्रा ने यरूशलेम की यात्रा की थी। यह उस बात की घोषणा करता है जिसमें बन्दियों को घर जाने की अनुमति दी गई थी और यह बताता है कैसे कुस्रू महान ने उन्हें बचे हुए मन्दिर के खजाने को वापस दे दिया जो नबूकदनेस्सर ने चुराया था।

यहूदियों को लौट जाने की कुस्रू की घोषणा (1:1-4)

[1]फारस के राजा कुस्रू के पहले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था वह पूरा हो जाए, इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और लिखवा भी दिया: [2]"फारस का राजा कुस्रू यों कहता है: स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसने मुझे आज्ञा दी कि यहूदा के यरूशलेम में मेरा एक भवन बनवा। [3]उसकी समस्त प्रजा के लोगों में से तुम्हारे मध्य जो कोई हो, उसका परमेश्वर उसके साथ रहे, वह यहूदा के यरूशलेम को जाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए - जो यरूशलेम में है वही परमेश्वर है; [4]और जो कोई किसी स्थान में रह गया हो, जहाँ वह रहता हो उस स्थान के मनुष्य चाँदी, सोना, धन और पशु देकर उसकी सहायता करें और इससे अधिक यरूशलेम स्थित परमेश्वर के भवन के लिये अपनी अपनी इच्छा से भी भेंट चढ़ाएँ।"

पुस्तक का आरम्भ उस आज्ञा को प्रस्तुत करता है जिसने परमेश्वर के लोगों को बँधुआई से छुड़ाया और उन्हें उनके पितरों की भूमि में लौट जाने की अनुमति दी (देखें 2 इतिहास 36:22, 23)।

आयत 1. फारस के राजा कुस्रू का पहला वर्ष 539 ई.पू. के भीतर रहा होगा, जब बेबीलोन को फारस ने जीत लिया था और कुस्रू द्वितीय ने यहूदियों पर शासन करना शुरू कर दिया। आज्ञा की आधिकारिक प्रकृति इस तथ्य से इंगित की जाती है कि इसकी घोषणा की जानी थी (शायद पूरे **राज्य** में सूचना देनेवाले के द्वारा जोर से पढ़ा जाता था) और नीचे लिखा भी जाता था (सार्वजनिक सूचना हेतु जारी)। बाद के घटनाक्रमों के प्रकाश में, यह भी महत्वपूर्ण था कि उस घोषणा को दर्ज किया गया और फारसी अभिलेखागार में रखा गया, जहाँ से बाद में इसे प्राप्त किया जा सकता था (देखें 6:1-5)।

यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था वह पूरा हो जाए इसलिये कुस्रू की घोषणा हुई। राजा की आज्ञा ने भविष्यद्वाणी को पूरा किया क्योंकि यिर्मयाह ने कहा था कि परमेश्वर के लोग बँधुआई के "सत्तर वर्ष" के बाद अपने देश लौट आएँगे (यिर्म. 25:11; 29:4-10)। सत्तर वर्ष या तो पहला देश-निकाला (लगभग 605 ई.पू.) के समय से पहली वापसी (लगभग 538 ई.पू.[2]) तक या मन्दिर के विनाश (लगभग 586 ई.पू.) से उसके पुनर्निर्माण के पूरा होने तक (लगभग 516 ई.पू.) की अवधि को गिना जा सकता है। एक और सम्भावना यह है कि "सत्तर" को एक आलंकारिक संख्या माना जाना चाहिए जो समय की पूर्णता या पूर्ण अवधि का संकेत देती है।

यह घोषणा इसलिये भेजी गई थी क्योंकि **यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा**।[3] इसका अर्थ है कि उसने "कुस्रू के मन को छुआ" - कुस्रू का काम यह था कि उसने विश्वास किया, विचार किया और निर्णय लिया। अन्य संस्करणों में इसका अनुवाद "यहोवा ने [उसके] मन को बदल दिया," यहोवा ने "राजा को प्रेरित किया" पाया गया है। अवश्य ही कुस्रू ने घोषणा जारी की, परन्तु परमेश्वर लोगों के यरूशलेम लौटने का अन्तिम कारण था।

आयतें 2, 3. यहूदियों को **यहूदा के यरूशलेम** में उनके घर लौटने और उनके यहोवा के भवन **बनाने** की अनुमति देना, अन्य बँधुआई में लाए गए लोगों के प्रति कुस्रू के व्यवहार के अनुरूप था। बेबीलोनियों ने अन्य समूहों को देश-निकाला कर दिया था और उनकी मूर्तियों को ले जाकर बेबीलोन के मन्दिरों में स्थापित कर दिया था। बेबीलोन पर कुस्रू की जीत के बाद, उसने अपने जय पाए हुए देशों में वहाँ के पूर्व निवासियों को घर लौटने के लिये प्रोत्साहित किया, बन्दियों को उनके देवताओं को वापस दे दिया, और अपनी ओर से इन देवताओं से विनती करने के लिये कहा। इन कार्यों का प्रमाण क्रुसू बेलन से मिलता है,[4] जिसकी खोज 1879 में बेबीलोन में किया गया था:

> मैं हिद्देकेल की दूसरी ओर (उन) पवित्र नगरों में लौट आया, जिनके पवित्र नगर लंबे समय से खंडहर के रूप में पड़े हुए हैं, वे मूर्तियाँ जो वहाँ पाई जाती हैं उन्हें

और उनके लिये स्थायी पवित्र नगरों को बसाया। मैंने उनके सभी (पूर्व) निवासियों को (भी) इकट्ठा किया और वे अपने अपने निवास स्थान में लौट गए। इसके अतिरिक्त, मैंने महान देवता मारदुक की आज्ञा से, सुमेर और अक्कड़ के सभी देवताओं, जिन्हें नाबोनिदस ने बेबीलोन में लाया था फिर से बसाया ... जिससे देवताओं के प्रमुख का क्रोध भड़क उठा था, जो बिना हानि पहुँचाए उनके (पुराने) पूजा स्थलों में थे जहाँ वे प्रसन्न थे।

उन सभी देवताओं से, बेल और नेबो से जिन्हें मैंने उनके पवित्र नगरों में फिर से बसाया है, वे उनसे मेरे लिये लंबी उम्र माँगे और मेरी बातों को उनके सामने रखें।[5]

क्योंकि यहूदियों का परमेश्वर अदृश्य था, कुस्रू केवल उनके दृश्य प्रतीकों को पुनर्स्थापित कर सकता था - अर्थात्, यरूशलेम के मन्दिर और उसमें जो वस्तुएँ थीं।

कुस्रू ने कहा कि **यहोवा** ने उसे **पृथ्वी भर का राज्य** दिया था और उसे **यरूशलेम में एक भवन बनाने** का निर्देश दिया था। उसने परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम ("प्रभु," "याहवेह," या "यहोवा") का प्रयोग किया, परन्तु इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि वह एक सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करने वाला था। यह प्राचीन शासकों के लिये कई देवताओं की उपस्थिति और शक्ति को स्वीकार करने का एक चलन था; अक्सर वे जिस देवता से बात करते थे उस क्षण उसी को ही आदर देते थे जैसे कि केवल वही एक ईश्वर होता था। शायद उनका रवैया वैसा ही था, जैसा किसी व्यक्ति का एक राज्य में रहना परन्तु दूसरे का दौरा करना। जिस राज्य में वह जाता था, वह निश्चित रूप से शासक को "राजा" के रूप में संदर्भित करता था, यह उल्लेख किए बिना कि उसकी निष्ठा दूसरे राजा के प्रति थी। इसलिये, भले ही कुस्रू ने अपनी सफलताओं के लिये यहोवा को जिम्मेदार ठहराया, पर एक बहुईश्वरवादी के रूप में उसने सम्भवतः अन्य देवताओं को भी उन्हीं उपलब्धियों के लिये श्रेय दिया। बेबीलोन पर उसकी जीत के बाद, कुस्रू ने अन्य देवताओं के प्रति अपनी भक्ति को प्रगट किया। उसने बेबीलोनियों के प्रमुख देवता मारदुक को अपना व्यक्तिगत देवता के रूप में बताया जबकि वह स्वयं एक फारसी था और इसलिये उसे मुख्य रूप से फारसी देवताओं के अधीन होना था।

जो कुछ भी उसकी व्यक्तिगत धार्मिक मान्यताएँ हैं, कुस्रू ने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जो परमेश्वर की अस्पष्ट समझ को प्रकट करते हैं। कुस्रू ने "परमेश्वर" **को स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर जो यरूशलेम में है वही परमेश्वर है** के रूप में वर्णित किया। "यहोवा" वास्तव में "स्वर्ग का परमेश्वर" और "इस्राएल का परमेश्वर" है; परन्तु कोई भी सच्चा विश्वासी उसे "यरूशलेम में रहने वाले परमेश्वर" के रूप में वर्णित नहीं करेगा, क्योंकि वह सर्वव्यापी है। यह वर्णन "कुस्रू के बहुईश्वरवाद को दर्शाता है, जो उसके विश्वास को दिखाता है कि एक ईश्वर है जो यरूशलेम में रहता है, और अन्य भूमि में अन्य ईश्वर हैं।"[6]

निःसन्देह, यह कुस्रू के लिये अनावश्यक था कि यहोवा पर विश्वास कर उसकी सेवा में प्रयोग किया जाए। बाइबल यह स्पष्ट करती है कि परमेश्वर अपनी ईश्वरीय

योजनाओं में किसी का भी उपयोग कर सकता है। पृथ्वी के राजा चाहे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, परमेश्वर अधिक शक्तिशाली हैं। वह सभी राजाओं के ऊपर राजा, "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु" (देखें 1 तीमु. 6:15) है। सभी अधिकार परमेश्वर से प्राप्त होते हैं: "परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है" (दानिय्येल 4:17); "कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं" (रोमियों 13:1)। उसी के अधिकार से "हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं" (प्रेरितों 17:28)। जब पिलातुस ने अपने अधिकार से यीशु को जोर देकर कहा, तो यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता" (यूहन्ना 19:11)।

उसी परमेश्वर ने कुस्रू के माध्यम से काम किया - एक अविश्वासी, एक बहुईश्वरवादी राजा, एक मनुष्य जिसे यह नहीं पता था कि वह यहोवा की इच्छा पूरी कर रहा है - उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिये आश्चर्य नहीं कर रहा था। बाइबल इस बात के कई स्पष्ट उदाहरण देती है कि परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों के लिये मूर्तिपूजक शासकों का उपयोग कैसे किया है।[7] जब परमेश्वर के लोगों पर उनके शत्रुओं ने जय प्राप्त की, तो ऐसा हमेशा इसलिये हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दी। ऐसे एक अवसर के बारे में दिया गया है जब अश्शूर ने इस्राएल पर जय प्राप्त की और उसके निवासियों को देश से निकाल दिया, 2 राजा. 17:23 कहता है कि "यहोवा ने इस्राएल को अपने सामने से दूर कर दिया ...। इस प्रकार इस्राएल अपने देश से निकालकर ...।"

विशेष रूप से, परमेश्वर का कुस्रू का उपयोग करना यशायाह द्वारा दी गई भविष्यद्वाणियों का पूरा होना था। यशायाह 44:28-45:5 में, परमेश्वर ने कुस्रू को अपना "चरवाहा" और अपना "अभिषिक्त" कहा है, उसने कहा कि वह इस्राएल के कारण कुस्रू को जातियों के ऊपर रखेगा। उसने संकेत दिया कि कुस्रू यरूशलेम और मन्दिर का पुनर्निर्माण करेगा। वास्तव में, कुस्रू परमेश्वर के हाथ में एक हथियार बन गया था। उसके बारे में, यहोवा ने कहा, "यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूँगा" (यशा. 45:5)। एक अदम्य परम्परा कहती है कि कुस्रू ने इन भविष्यद्वाणियों को यशायाह की पुस्तक में पढ़ा, जिसके चलते उसने यहूदियों को वापस जाने का आदेश जारी किया;[8] परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यह परम्परा सही कह रही है।

आयत 4. यहूदा की वापसी को इस लेख में उनके दूसरे निर्गमन के रूप में चित्रित किया गया है। इस्राएलियों ने मिस्र में चार सदी दासत्व में बिताई थीं; दक्षिणी राज्य के लोगों ने देश से निकाले जाने पर बेबीलोन में सात दशक बिताए थे। जिस प्रकार परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाया था, वैसे ही इस पीढ़ी को बेबीलोन से छुड़ा रहा था।

यहूदा में लौटने वाले प्रत्येक यहूदी **बचे हुए** मनुष्य के रूप में जाने जाते थे। यह शब्द क्रिया שָׁאַר (*शाआर*) के एक कृदंत रूप का अनुवाद करता है, जो यशायाह 10:20-22 में संज्ञा "पवित्र लोग," שְׁאָר (*शेआर*) से सम्बन्धित है। जो कोई किसी

स्थान में रह गया हो, का शाब्दिक अनुवाद किया जा सकता है **जिस किसी स्थान पर वह ठहर जाता है।** "परदेशी होता है" क्रिया גּוּר (*गुर*) से आता है, जिसका अर्थ है "एक परदेशी के रूप में जीना" (ESV)। यहूदियों ने बेबीलोन की बँधुआई में जो समय बिताया वह कभी भी खत्म न होनेवाला जैसा था।

आज्ञापत्र जारी होने से सभी यहूदियों के लिये उसे छोड़ना सम्भव हो गया; परन्तु अधिकांश, बेबीलोन में आराम और समृद्धि पाकर, वहीं रहे। जो लोग वहीं रहे, उन्हें उदारता से भेंट के साथ लौटने वालों की सहायता करने के लिये प्रोत्साहित किया गया। कुस्रू ने निर्देश दिया, **"जो कोई किसी स्थान में रह गया हो, जहाँ वह रहता हो उस स्थान के मनुष्य चाँदी, सोना, धन और पशु देकर उसकी सहायता करें और इससे अधिक यरूशलेम स्थित परमेश्वर के भवन के लिये अपनी अपनी इच्छा से भी भेंट चढ़ाएँ।"** ये भेंट वापस आनेवालों के लिये मार्ग के और फिर से बसने के लिये उपयोगी थे। "अपनी अपनी इच्छा से भेंट चढ़ाने" का उद्देश्य सम्भवतः मन्दिर के पुनर्निर्माण के खर्चों में सहायता करना था। वे पाठक को उस स्वतंत्र इच्छा से चढ़ाए गए भेंट का स्मरण दिलाते हैं जो तब इस्राएलियों द्वारा दिया गया था जब मिलापवाले तम्बू को बनाया गया था (निर्गमन 35:20-36:7)। यह भी सम्भावना है कि गैर-इस्राएल पड़ोसियों को यहूदियों की यात्रा पर उनकी सहायता करने का अवसर दिया गया था (देखें 1:6)।

यहूदियों की प्रतिक्रिया और भवन के लिये भेंट (1:5-11)

5तब यहूदा और बिन्यामीन के जितने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों और याजकों और लेवियों का मन परमेश्वर ने उभारा था कि जाकर यरूशलेम में यहोवा के भवन को बनाएँ, वे सब उठ खड़े हुए; 6और उनके आसपास सब रहनेवालों ने चाँदी के पात्र, सोना, धन, पशु और अनमोल वस्तुएँ देकर, उनकी सहायता की; यह उन सबसे अधिक था जो लोगों ने अपनी अपनी इच्छा से दिया। 7फिर यहोवा के भवन के जो पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से निकालकर अपने देवता के भवन में रखे थे, 8उनको कुस्रू राजा ने, मिथ्रदात खजांची से निकलवा कर, यहूदियों के शेशबस्सर नामक प्रधान को गिनकर सौंप दिया। 9उनकी गिनती यह थी, अर्थात् सोने के तीस और चाँदी के एक हज़ार परात और उनतीस छुरी, 10सोने के तीस और मध्यम प्रकार की चाँदी के चार सौ दस कटोरे तथा अन्य प्रकार के पात्र एक हज़ार। 11सोने चाँदी के पात्र सब मिलाकर पाँच हज़ार चार सौ थे। इन सभों को शेशबस्सर उस समय ले आया जब बन्दी बेबीलोन से यरूशलेम को आए।

आयत 5. बेबीलोन के यहूदियों ने कुस्रू की आज्ञा पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाई। विशेष रूप से, **यहूदा और बिन्यामीन** (दो गोत्र जिन्होंने दक्षिणी राज्य का निर्माण किया) **के** जितने पितरों के घरानों के **मुख्य पुरुष** और **याजक और लेवी** और **जिनका मन परमेश्वर ने उभारा था वे सब** की लौटने के लिये तैयार थे। परमेश्वर इस मामले में काम कर रहा था, लोगों को वह करने के लिये प्रोत्साहित

कर रहा था जो वह उनसे करवाना चाहता था। वापस जाने के प्रति जिस बात ने उन्हें प्रतिक्रिया दिखाने के लिये आगे लाया, वह उनके देश में लौट जाने की उनकी सोच नहीं थी, न ही यह सम्भावना थी कि वे अधिक स्वतंत्रता का आनन्द ले सकते थे या वहाँ अधिक समृद्धि का अनुभव कर सकते थे। बल्कि, उनकी यह इच्छा थी कि वे यहोवा के भवन को **बनाएँ**।

परमेश्वर ने अपने लोगों के केवल एक छोटे समूह का प्रयोग अपने बड़े बड़े उद्देश्यों को पूरा करने के लिये किया। डेरेक किडनर ने बताया कि, भले ही दो सौ वर्ष पहले उत्तरी राज्य का विघटन हो गया था, परन्तु यहूदा के छोटे राज्य (जिसमें अन्य गोत्रों के कुछ सदस्य थे) को अभी भी "इस्राएल" (1:3; 2:2) कहा जा सकता था। उन्होंने लिखा, "अब यहोवा ने, यद्यपि इस बात पर जोर देने के लिये कि वह एक बड़ी सेना बल का परमेश्वर नहीं हैं, इस कार्य में केवल पवित्र जन के मन को उभारा।"[9]

आयत 6. कुछ लोग वापस नहीं आए, परन्तु फिर वे कार्य में शामिल थे। **वे सब** का अर्थ था वे यहूदी जिन्होंने बेबीलोन में रहने का निर्णय लिया था, परन्तु इसके साथ ही इसमें उनके अन्यजाति पड़ोसी भी शामिल हो चुके थे। बेबीलोन में रहने वालों ने उदारतापूर्वक दिया, जैसा कुस्रू ने कहा था। इस तरह, उन्होंने उनके कार्य पर यात्रियों को **प्रोत्साहित किया**। इब्रानी पाठ में इसका शाब्दिक अर्थ है उन्होंने "अपने हाथ मजबूत किए," (KJV)। अन्य संस्करण मुहावरे का अनुवाद "सहायता प्रदान किए," (NRSV) "सहारा बने," (NJPSV) या "साथ दिए" (NIV) के रूप में करते हैं। उन्होंने **चाँदी के पात्र**, और **सोना, धन, पशु और अनमोल वस्तुएँ देकर** ऐसा किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने **अपनी अपनी इच्छा से** दिया, जिसका उपयोग सम्भवतः मन्दिर के पुनर्निर्माण में लगने वाले आर्थिक सहायता लिये किया जाना था। 1:6 स्मरण दिलाता है कि इस्राएलियों ने मिस्रियों से "सोने-चाँदी के गहने" किस तरह प्राप्त किए, निर्गमन के समय उन्हें लूट लिया (निर्गमन 12:35, 36)।

आयत 7. कुस्रू राजा ने स्वयं यहूदियों को मन्दिर को फिर से बनाने में योगदान दिया था, जो **नबूकदनेस्सर** ने उनसे ले लिया था - पात्रों को जो **यरूशलेम में यहोवा के भवन** से लूट लिए गए थे। यरूशलेम पर तीन आक्रमणों के दौरान 605 ई.पू. (दानिय्येल 1:1, 2), 597 ई. पू. (2 राजा 24:13), और 586 ई. पू. जब मन्दिर को नष्ट कर दिया गया (2 राजा 25:13-17)। नबूकदनेस्सर ने उन पात्रों को बेबीलोन में ले आया और उन्हें **अपने देवता के भवन में रखे थे** (दानिय्येल 1:2)। इनमें से कुछ को बेलशस्सर ने भोज में उनमें दाखमधु पीने के लिये ले लाया जिसका वर्णन दानिय्येल 5:1-4 में किया गया है।

आयत 8. कुस्रू ने मन्दिर से पात्रों को **मिथ्रदात खजांची से** निकलवा लिया, और उसने बाद में उन्हें **शेशबस्सर** को सौंप दिया। जिसे **यहूदियों का प्रधान** कहा जाता है, परन्तु "प्रधान" के लिये शब्द (נָשִׂיא, *नासी)* का अर्थ यह नहीं है कि वह राज घराने से था (अर्थात् दाऊद के वंश से)। इस इब्रानी शब्द का अर्थ "शासक" या "अगुआ" भी हो सकता है।

एज्रा 5:14-16 में भी शेशबस्सर का उल्लेख किया गया है, परन्तु मन्दिर के वास्तविक पुनर्निर्माण के विवरण में उसका उल्लेख नहीं है। बल्कि, जरुब्बाबेल (येशू के साथ, महायाजक) को उस प्रयास में यहूदियों का नेतृत्व करने का श्रेय दिया जाता है (3:2)। शेशबस्सर और जरुब्बाबेल के बीच सम्बन्ध के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है, परन्तु कई सम्भावनाएँ जताई गई हैं। (1) शेशबस्सर भले ही "यहूदियों का प्रधान" हो गया हो, परन्तु वह पवित्र भक्त बंदियों का नाममात्र का मुखिया था, जबकि जरुब्बाबेल वह व्यक्ति हो सकता है जो वास्तव में प्रशासनिक पदाधिकारी था (जैसा कि इंग्लैंड में राजा या रानी और प्रधानमंत्री दोनों हो सकते हैं)। (2) एक और सम्भावना यह है कि दोनों व्यक्तियों ने जिम्मेदारियों को किसी तरह साझा किया होगा। एक मन्दिर के खजाने का प्रभारी (शायद एक मुख्य लेखापाल की तरह), दूसरा प्रमुख अगुआ/प्रशासक हो सकता है। यह भी सम्भव है कि उन्होंने यहूदा के शासक के रूप में वैकल्पिक रूप से सेवा की, या यह कि एक के चले जाने से पहले दूसरा बनाया गया हो। (3) कुछ ने सुझाव दिया है कि "शेशबस्सर" जरुब्बाबेल का ही दूसरा नाम था (जैसे दानिय्येल और उसके तीन मित्रों के यहूदी और बेबीलोनिया दोनों नाम थे)। इस प्रस्ताव के साथ समस्या यह है कि "शेशबस्सर" और "जरुब्बाबेल" दोनों स्पष्ट रूप से बेबीलोन के नाम थे। (4) सम्भवत: जब यहूदियों ने बेबीलोन को छोड़ा तब शेशबस्सर ही प्रभारी था, परन्तु किसी कारणवश जरुब्बाबेल यहूदा में उनके आने के बाद अगुआ बना।[10]

आयतें 9-11. पाठ के लेखक ने मन्दिर के बर्तनों को वापस करने के बारे में ध्यान देकर विवरणों को सूचीबद्ध करने की अपनी प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया। आज के मानकों के अनुसार, एक विशाल खजाने की कुल राशि:

30 **सोने के परात**
1,000 **चाँदी के परात**
29 **छुरी**
30 **सोने के कटोरे**
410 **चाँदी के कटोरे**
1,000 **अन्य प्रकार के पात्र**

सूची में दो कठिनाइयाँ मिलती है। सबसे पहले, शब्द "छुरी" (מַחֲלָפִים, *माचलापिम*) अस्पष्ट है; इसे कई तरीकों से प्रस्तुत किया गया है: "चाकू," "चाँदी के पात्र," "विभिन्न प्रकार के बर्तन," [चाँदी के बर्तन] मरम्मत किए गए" और "अन्य पात्र।"

दूसरा, पात्र पर, कुल 5,400 के साथ एक समस्या प्रतीत होती है, क्योंकि यह सूचीबद्ध एक जैसे वस्तुओं (2,499) का योग नहीं है। एडविन एम. यामूची ने स्पष्ट किया कि अन्तर यह हो सकता है कि "केवल बड़े और अधिक मूल्यवान पात्रों को अंकित किया गया था।"[11] इन सभी **सोने और चाँदी** की वस्तुओं को **शेशबस्सर** को

सौंप दिया गया था, जिसे इन खजाने को उस समय लाने का श्रेय दिया गया था **जब बन्दी बेबीलोन से यरूशलेम को आए।** कीथ एन. शॉविल ने सोचा कि लेखक का "मुख्य बिंदु सुलेमान के और दूसरे मन्दिर के बीच निरन्तरता स्थापित करना प्रतीत होता है। यद्यपि दूसरा मन्दिर पूरी तरह से एक नया निर्माण होगा, दोनों में समान पवित्र पात्रों का उपयोग किया गया था।"[12]

अध्याय 1 पुस्तक के पहले छः अध्यायों के विषय पर जोर देकर समाप्त होता है: इस भाग में, प्राथमिक चिन्ता यह है कि परमेश्वर के लोगों ने कैसे बेबीलोन को छोड़ा, यरूशलेम पहुँचे, और परमेश्वर के मन्दिर का पुनर्निर्माण किया।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के रहस्यजनक तरीके (1:1-4)

एज्रा के पहले अध्याय के अनुसार, लगभग 538 ई.पू. में, फारसी राजा कुस्रू महान ने आदेश जारी किया, जिसने बेबीलोन के बँधुआई में कई वर्ष बिताने के बाद यहूदियों को अपने देश लौटने की अनुमति दी। हम एज्रा 1 की घटनाओं से परमेश्वर के और मनुष्य के साथ उसके व्यवहार के बारे में क्या सीख सकते हैं? कम से कम चार सच्चाई स्पष्ट प्रतीत होती हैं।

परमेश्वर सर्वशक्तिमान है. कुस्रू ने घोषणा जारी की जिससे यहूदियों को वापस जाने की अनुमति मिली, परन्तु परमेश्वर ने उसे ऐसा करने के लिये प्रेरित किया। इस पाठ में स्पष्ट किया गया है: "यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा, इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया" (1:1)। यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि परमेश्वर अपने लोगों को उनके घर लाने के लिये कुस्रू का उपयोग करेगा, शासक का नाम लेकर कुस्रू के शासन के शुरू होने से लगभग दो सौ वर्ष पहले से बुलाया था (यशा. 44:28-45:5)। प्रेरणा पाकर यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि सत्तर वर्ष बँधुआई में रहने के बाद, यहूदियों को अपनी भूमि में लौटने की अनुमति होगी (यिर्म. 25:11; 29:4-10)। परमेश्वर ने कुस्रू के माध्यम से इन भविष्यद्वाणियों के पूरे होने के बारे में बताया।

परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों के लिये कुस्रू का उपयोग किया। क्या कुस्रू को मालूम था कि वह परमेश्वर द्वारा उपयोग किया जा रहा है? शायद नहीं। भले ही कुस्रू ने परमेश्वर ("प्रभु," या "यहोवा" के निजी नाम का प्रयोग किया; 1:2) जब उसने कहा कि परमेश्वर ने उसे सफलता दी है, तो सम्भवतः वह इस्राएल के परमेश्वर को संदर्भित करते हुए अपने दिनों के रीति-रिवाजों का पालन कर रहा था मानो वह एकमात्र परमेश्वर था।

उन लोगों के लिये जो बहुत से ईश्वरों पर विश्वास करते थे, जैसा कि कुस्रू करता था, ईश्वर भक्ति और उदारता के लिये आवश्यक था कि कोई भी ईश्वर की बात ऐसे करता था जैसे कि वह एकमात्र ईश्वर था। इसलिये जब कुस्रू ने यहूदियों को सम्बोधित किया तो उसने उनसे उनके परमेश्वर के बारे में सही सही बात की जैसे कि वह एकमात्र परमेश्वर था और जिसने उसे अन्य देशों पर जय प्राप्त करने

की अनुमति दी थी।

यद्यपि, कहानी का मुद्दा यह है कि, भले ही कुस्रू वास्तव में परमेश्वर को नहीं जानता था (देखें यशा. 45:5), परमेश्वर ने उसे अधिकार दिया ताकि वह बदले में यहूदियों को वापस जाने दे। परमेश्वर ने अपने स्वयं के उद्देश्यों के लिये इस अन्यजाति शासक का उपयोग किया क्योंकि परमेश्वर के पास सभी मानव शासकों पर शक्ति थी, और है!

आज, मसीहियों को यह जानने में शान्ति मिलती हैं कि जब भी पृथ्वी पर बुराई बढ़ने लगती है, परमेश्वर शासकों पर शासन करता है और उन्हें केवल इसलिये शासन करने की अनुमति देता है क्योंकि यह उसके उद्देश्यों के अनुरूप है। अन्त में, क्योंकि परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है, उसका होना जय का कारण होगा।

परमेश्वर अपने दिए वचन पूरा करता है। पाठ कहता है कि कुस्रू ने यहूदियों को लौटने की अनुमति दी "कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था वह पूरा हो जाए" (1:1; देखें यिर्म. 29:10)। परमेश्वर ने सत्तर वर्ष की बन्दी से अपने लोगों को वापस लाने का वचन दिया था, और उसने वह वचन पूरा किया।

यह, निश्चित रूप से, परमेश्वर की एक निरन्तर विशेषता है। "यहोवा का वचन ताया हुआ है" (2 शमूएल 22:31; NRSV; देखें 2 पतरस 3:9)। परमेश्वर ने अब्राहम से किया अपना वचन पूरा किया, भले ही जिस समय वचन दिया गया और प्रतिज्ञा का पुत्र इसहाक के पैदा होने के बीच पच्चीस वर्ष बीत गए। इस्राएल के पापों के बावजूद भी परमेश्वर ने इस्राएल को कनान में लाने का अपना वचन पूरा किया। उसी तरह, हम विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर अपने वचनों को आज भी पूरा करता है और भविष्य में भी करता रहेगा। वह उन लोगों को बचाएगा जो सुसमाचार का पालन करते हैं (प्रेरितों 2:38; 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10)। वह उन लोगों को स्वर्ग में ले जाएगा जो उसके प्रति विश्वासयोग्य हैं (प्रका. 2:10)।

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करता है। कुस्रू और यहूदियों के मामले में, परमेश्वर के उद्देश्य के लिये आवश्यक था कि यहूदी अपने देश को लौट जाएँ। यह इस्राएल को परमेश्वर के दिए देश और मसीह को संसार में लाने के वचन के बीच सम्बन्ध पर जोर देता है।[13] जब मसीहा आया, तो उद्देश्य पूरा हुआ; इसलिये, नए नियम के समय से इस्राएल के पास "पवित्र भूमि" पर परमेश्वर द्वारा दिया कोई विशेष अधिकार नहीं था।

परमेश्वर अपने रक्षात्मक चिन्ता के माध्यम से संसार में काम करता है। बाइबल के समय में, परमेश्वर ने कभी-कभी आश्चर्य कर्मों के माध्यम से काम किया। आश्चर्य कर्म वास्तविक थे। वे ऐतिहासिक थे; वे निश्चित समय पर निश्चित स्थानों पर होते थे। यद्यपि, तब भी परमेश्वर ने कभी-कभी बिना आश्चर्य कर्मों के या रक्षा की चिन्ता करते हुए काम किया। युसूफ के अनुभव आश्चर्य कर्मों और बिना आश्चर्य कर्मों के या प्रायोगिक, दोनों उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिये परमेश्वर के काम करने के उदाहरणों को प्रस्तुत करते हैं।[14]

जिस समय कुस्रू जीवित था, उस युग के अवलोकन करने वालों को क्या मालूम हो सकता था कि शासन में उसका अधिकार परमेश्वर के अनुग्रह से पूरा हुआ? फिर

भी, ऐसा हुआ। परमेश्वर ने अपने लोगों को घर भेजने के लिये कुस्रू को उभारा (यशा. 44:28-45:5)। ऐसा उसने आश्चर्य ढंग से नहीं, बल्कि उनकी चिन्ता करते हुए किया।

परमेश्वर आज आश्चर्य कर्मों के माध्यम से काम नहीं करता है (1 कुरि. 13:8-13), परन्तु वह अभी भी काम करता है। इस विचार का सबसे अच्छा कथन नया नियम में रोमियों 8:28 में पाया जाता है: "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" इस आश्वासन के साथ मसीही यह विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिये इस संसार में लोगों और घटनाओं के माध्यम से काम करता है। वह पापमय स्वभाव, दुष्ट लोगों, प्राकृतिक घटनाओं और स्पष्ट रूप से अव्यवस्थित "अवसर," साथ ही साथ उसके लोगों द्वारा किए गए अच्छे कामों के माध्यम से काम कर सकता है। इसलिये मसीही नहीं मानते, कि वे एक निरर्थक संसार में रहते हैं। बल्कि, परमेश्वर कर सकता है और करता है और जीवन को अर्थ देगा।

निष्कर्ष। एज्रा 1 हमें परमेश्वर के बारे में कई महत्वपूर्ण सच्चाइयों को सिखाता है: उसके पास संसार के राजाओं के ऊपर अधिकार है, वह अपने दिए वचन को पूरा करता है, वह अपने उद्देश्यों को पूरा करता है, और वह अपने चिन्ता करने के माध्यम से काम करता है। इन सच्चाइयों को जानने के बाद, मसीही रात में अच्छे से विश्राम कर सकते हैं, चाहे बुराई हर समय जीतती हुई दिखाई दे रही हो, चाहे दिन निराशाजनक हों। वे जानते हैं कि समय के कालेपन के पीछे सर्वशक्तिमान परमेश्वर खड़ा है, जो अन्त में - जैसा कि उसने एज्रा के दिन में किया था - बुराई पर जीत, जय प्राप्त करना, और अपने लोगों को घर लाना!

विवरण, अधिक विवरण! (1:5-11)

हम में से कई लोग स्वयं को ऐसे लोगों के समान सोचना पसंद करते हैं जो "बड़ी छवि" देखते हैं और विवरण के बारे में ध्यान नहीं देते हैं। हम स्वयं को श्रेष्ठ मान सकते हैं क्योंकि हमारे पास बड़े विचार हैं, महान दर्शन हैं; और हम उन लोगों को देख सकते हैं जो विवरणों को देखते हैं, जो सूचियों को तैयार करते हैं, जो गिनतियों के साथ काम करते हैं।

एज्रा, नहेम्याह और इतिहास की पुस्तकें दर्शाती हैं कि परमेश्वर विवरणों के बारे में चिन्तित है! उसने उन पुस्तकों में हजारों विवरण दर्ज करवाएँ हैं। शायद हमें सीखना चाहिए कि "बड़ी छवि" हजारों विवरण से भरा हुआ है; और यदि वे विवरण सही नहीं हैं, तो चित्र सही नहीं होगा। यदि किसी योजना के विवरण को सावधानीपूर्वक नहीं सोचा जाता है और क्रियान्वित किया जाता है, तो योजना - चाहे कितनी भी बड़ा या दूरदर्शी क्यों न हो - सफल नहीं होगी! हमें उस योजना के विवरण के बारे में चिन्ता करना सीखना चाहिए जिसे हम आगे बढ़ाने की आशा करते हैं।

इसके अतिरिक्त, क्योंकि परमेश्वर ने इन विवरणों को सूचीबद्ध करने के लिये

अपने प्रवक्ताओं का उपयोग किया, इसलिये हमें उन लोगों को छोटा नहीं समझना चाहिए जो आज उसी काम को करते हैं - जो लोग लेखा रखते हैं, संख्याओं को गिनते हैं, प्रमाण इकट्ठा करके रखते हैं, पत्र लिखते हैं। परमेश्वर की कलीसिया को ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है, जिनके पास क्या हो सकता है के महान दर्शन देखने का एक वरदान है, परन्तु यह उन लोगों की भी आवश्यकता है जिनके पास यह क्या है के विवरण से निपटने का वरदान है।

समाप्ति नोट

[1]विलियम काउपर, "गॉड मूव्स इन अ मिस्टीरियस वे," *सॉंग ऑफ द चर्च*, कॉम्पाइलिंग एण्ड एड. एल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुसियानाः हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। [2]वापसी के लिये दी गई एक वैकल्पिक तारीख 536 ई.पू. है, जो 606 या 605 ई.पू. में यहूदियों के पहली देश से निकालने के ठीक सत्तर वर्ष बाद होगी (देखें दानिय्येल 1:1, 2)। [3]वाक्यांश "यहोवा ने मन को उभारा" जरुब्बाबेल, यीशु और पवित्र लोग (हाग्गै 1:14) के विषय में भी बताता है। ऐसा ही एक कथन अश्शूर के राजा के सम्बन्ध में प्रकट होता है (1 इतिहास 5:26)। वर्तमान संदर्भ में, परमेश्वर को उन लोगों की भावना को उभारने का श्रेय दिया जाता है जो यरूशलेम लौट रहे थे (1:5)। [4]नौ इंच की मिट्टी के बेलन को लंदन में ब्रिटिश संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है। [5]ए. लियो ओपेनहाइम, अनुवाद, "साइरस [सिलिंडर]," इन *एन्सिएन्ट नियर ईस्ट टेक्स्ट्स रिलेटिंग टू दि ओल्ड टेस्टामेन्ट*, तीसरा एडिशन, एड. जेम्स बी. प्रिचर्ड (प्रिंसटन, न्यू जर्सी: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 316. [6]रुबेन रतज़लफ एण्ड पॉल टी. बटलर, *एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1979), 12. [7]उदाहरण के लिये, परमेश्वर ने फिरौन के मन को उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिये कठोर किया (निर्गमन 7:3-5; 9:12-16; 10:1, 2) और अपने लोग इस्राएल को दण्ड देने के लिये उसने अश्शुर को "[अपने] क्रोध का लठ" के रूप में प्रयोग किया (यशा. 10:5) है। [8]जोसेफस *एन्टीक्विटिस* 11.1.1-2. [9]डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द टेंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्टरीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 34. [10]अधिक जानकारी के लिये, देखें *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया*, रिवाइज्ड एडिशन, एड. जेफ्री डब्ल्यू. ब्रोमली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4:475 में रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर, "शेशबज्जार।"

[11]*दि एक्सपोजिटर'स बाइबल कॉमेन्टरी*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैबेलिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 604 में एडविन एम. यामूची, "एज्रा-नहेम्याह।" [12]कीथ एन. शॉविल, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस एनआईवी कॉमेन्टरी (जोप्लिन, मो: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2001), 46. [13]मीका ने पहले ही भविष्यद्वाणी कर दी थी कि मसीहा बेतलेहेम से आएगा (मीका 5:2; देखें मत्ती 2:6). [14]परमेश्वर ने आश्चर्य रीति से स्वप्नों के माध्यम से भविष्य को प्रगट किया, युसूफ को उन स्वप्नों की व्याख्या करने की क्षमता प्रदान की। इसके विपरीत, युसूफ को उनके भाइयों द्वारा दासत्व में बेचा जा रहा है और मिस्र में अधिकारी बनाया जाना परमेश्वर के योजनाबद्ध तरीके से काम करने का एक उदाहरण है (उत्पत्ति 45:4-8; 50:15-21)।